

मौसम
शहर अधिकतम वृत्तिम
रांची 25.0 09.4
डालटनगंज 29.4 09.3
धनबाद 26.6 14.0
तापमान डिग्री सेल्सियस में।

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार



<https://epaper.shubhamsandesh.net>

रांची, शनिवार 15 नवंबर 2025 • मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 11, संवत् 2082 • रांची एवं पटना से प्रकाशित • वर्ष : 3, अंक : 215 • गूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12



ज्ञानसंख्या



अनंत
सम्भावनाओं
की ओर

मुख्य अतिथि

श्री संतोष कुमार गंगवार

माननीय राज्यपाल, झारखण्ड

अध्यक्षता

श्री हेमन्त सोरेन

माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

विशेष अतिथि

श्री के. राजू

ए.आई.सी.सी. के सी. डब्ल्यू.सी. के स्थायी
आगंत्रित सदस्य एवं झारखण्ड प्रभारी

संकलित अतिथि

श्री संजय सेठ

माननीय केल्लीव राज्य राज्य राज्य

श्री राधा कृष्ण किशोर

माननीय राज्य राज्य राज्य

श्री संजय प्रसाद यादव

माननीय राज्य राज्य राज्य

श्री दीपक प्रकाश

माननीय संसद सदस्य, राज्य राज्य

श्रीमती भवानी माजी

माननीय राज्य राज्य राज्य

श्री आदित्य प्रसाद साहु

माननीय राज्य राज्य राज्य

श्री प्रदीप कुमार वर्मा

माननीय संसद सदस्य, राज्य राज्य

श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह

माननीय सदस्य, झारखण्ड विधान सभा

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

श्री संतोष कुमार गंगवार
माननीय राज्यपाल, झारखण्ड

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड



उलगुलान के महानायक

भगवान बिरसा मुंडा

की 150वीं जयंती
पर 25 वर्ष का
युवा झारखण्ड धरती आबा
को नमन करता है

जोहार

झारखण्ड के खूंटी स्थित गलिहात की पहाड़ियों और जंगलों में
जन्मा एक ऐसा महानायक, जिसने अपने साहस और संघर्ष से
ब्रिटिश शासन को चुनौती दी। वे बिरसा मुंडा थे, जिन्हें उनके
अल्यायियों ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के रूप में पूजा।

बिरसा मुंडा ने आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष का
बिजुल बजाया, उनका उद्देश्य स्पष्ट था। लोगों को उनकी भूमि और
अधिकार वापस दिलाना।

बिरसा मुंडा के क्रांतिकारी विचारों से विचित्र हो कर ब्रिटिश शासकों
ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। जेल में ही 09 जून 1900
को धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा शहीद हो गए।

लोकिन उनके उलगुलान का संदेश थमा नहीं। बिरसा मुंडा समेत
वीर पुरुषों के आदर्शों पर चल कर लंबे संघर्ष और बलिदान के बाद
आंदोलनकारियों ने झारखण्ड अलग राज्य का सपना पूरा किया। आज
धरती आबा का युवा झारखण्ड हम सभी के समक्ष है।



श्री संतोष कुमार गंगवार
नागरिकीय संघरणाल, झारखण्ड

श्री हेमन्त सोरेन
नागरिकीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

मंथन

घाटशिला उपचुनाव ने बचा ली सरकार की प्रतिष्ठा

किसी भी लोकांत्रिक व्यवस्था में उपचुनाव केवल एक सीट का मसला नहीं होता, बल्कि सरकार को दिशा जनविश्वास और राजनीतिक संतुलन का संकेतक भी होता है। घाटशिला उपचुनाव के नवीनीतों ने यह तथ्य एक बात पिस्तु किया है। कठिन राजनीतिक माहाल, विरोधी दलों के आक्रम और कई अधियानों के सार्वजनिक कार्रवाई की धाराओं के बीच इस सेट पर जीत दर्ज करना सरकार के लिए न केवल राहत भरा क्षण रहा, बल्कि उसके राजनीतिक माहोल को भी जबूत करने वाला सावित हुआ। पिछले कुछ महीनों में सरकार पर दबाव बढ़ रहा था—चाहे मुझ महांगड़ का हो, रोजगार का या कुछ नवीनीति निर्णयों को लेकर जन असंतोष, विपक्ष इस उपचुनाव को एक जनमत-संग्रह की तरह पेश कर रहा था और इसे सरकार को लोकप्रियता की रोशनी साना जा रहा था, ऐसे में घाटशिला उपचुनाव का परिणाम सिंधे तौर पर सत्ता पक्ष के प्रदर्शन पर जनमानस की मुहर के रूप में देखा गया। यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि इससे सरकार को भावित्य की नीतियों को लेकर अधिक अत्यधिक व्यवस्था और अपेक्षा की नीतित पहल के लिए ऊज़ भी प्रदान किया गया है। लेकिन वह उम्मीद भी खोनी है—दूसरी ओर विपक्ष के लिए यह परिणाम रणनीति पुनः तय करने और जनता से संवाद मजबूत करने का संकेत देता है। कुल मिलाकर, घाटशिला उपचुनाव ने न सिर्फ़ सरकार की प्रतिष्ठा बचाई है, बल्कि राजनीतिक स्थिरता और आगे की नीतित पहल के लिए ऊज़ भी प्रदान किया गया है। उनका जनता बदलाव चाहती है, लेकिन वह उम्मीद भी खोनी है—और सरकार के पास विश्वास को कायाम रखने की जिम्मेदारी और अवसर, दोनों मौजूद हैं।

नजरिया

बिहार में एनडीए को प्रचंड बहुमत, विपक्ष लगभग साफ

बिहार में हाल ही संपन्न हुए चुनावों ने राज्य की राजनीति में एक बार फिर बड़ा संदेश दिया है—विपक्ष पूरी तरह सफार हो गया। यह परिणाम केवल सीटों की संख्या का खेल नहीं, बल्कि जनवासीयों और राजनीतिक रणनीतियों का गहरा अविवाक है। सत्ता पक्ष जन्मी संगठित आक्रमक और जन्मी स्तर पर मजबूती के मैदान में तराया, वहीं विपक्ष अपनी देने की स्थिति में ही नहीं है, दूसरी ओर, सत्ता पक्ष ने विकास, स्थिरता और सामाजिक योजनाओं को लेकर एक सुगम नीटिव तैयार किया। विस्तर समवताओं पर प्रभाव डाला। चुनाव अधिकान के दौरान भी विपक्ष मुझे को पहले दो संफल नहीं रहा। महागां, बेरोजगारी और कानून-व्यवस्था जैसे प्रमुख सवाल उठाए गए, परन्तु उन्हें संगठित व्यवरूप नहीं मिल सका। जनता ने इन तकों को सुना तो जरूर, पर उन तकों को सुना तो लापार्थी योजनाओं और सामाजिक स्तर पर पहुंच बनाने वाली राजनीति के सहाय लोकप्रत को अपने पक्ष में मोड़ लिया। यह परिणाम विपक्ष के लिए आत्मसंघर्ष का अवसर है, बिहार की जनता ने इस चुनाव में सफार संदेश दिया है—विश्वास का अवसर है। बिहार की जनता ने इस चुनाव में सफार संदेश के लिए विश्वास का अवसर है।

16 सितंबर, 2022 को मैंने अपने फेसबुक वॉल पर प्रशंसात किशोर के बारे में यह पोस्ट लिखा था। इसे फिर से मैं हू-ब-हू यहां पेश कर रहा हूं।

प्रशंसात बिहार में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं

सुरेन्द्र किशोर

प्रशंसात किशोर बड़ी उम्मीद के साथ बिहार में सक्रिय हैं। उनकी मेहनत देखकर मैं प्रभावित हूं। पर किसी सार्वजनिक देख बाज़ में मुझे डॉ. सुब्रतमयन

स्वामी की सार्वजनिक याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे



बिहार के बारे में प्रशंसात की समझदारी का स्तर भी डॉ. स्वामी जैसी ही है।

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी का आफिस था। डॉ. स्वामी ने निश्चय किया था कि वे

बिहार की सक्रियता याद आ रही है। नब्बे के दशक में डॉ. स्वामी भी बिहार में सक्रिय हो गए थे। उन्होंने मध्य पक्ष में एक मकान भी खारीदार लिया था। उसमें उनकी पार्टी



बिहार चुनाव : महागठबंधन की ये 5 गलतियां पड़ी भारी

भाजपा बड़ी पार्टी बनकर उभरी एनडीए ने ऐतिहासिक बाजी मारी

संचाददाता | पटना

बिहार चुनाव के अब तक के रुद्धानों से सफ हो गया है कि राज्य में एनडीए को ऐतिहासिक जनादेश मिला है, जबकि महागठबंधन हासिए पर सिमट गया है। तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाकर मैटान में उत्तर महागठबंधन ने कई ऐसी राजनीतिक गलतियां कीं, जिनकी भराई करने में उत्तर लोक समय का इंतजार करना पड़ सकता है, जिस बापसी की उम्मीद महागठबंधन को इस चुनाव में थी, वह पूरी तरह टूट गई। ऐसे में वह पालिना जरूरी हो जाता है कि आखिर किस स्तर पर यह गठबंधन चूक गया।



महागठबंधन की बड़ी गलतियां

1 कांग्रेस का 'वोट चोरी' को मुक्त बनाना भारी पड़ा

कांग्रेस ने बिहार चुनाव में वोट चोरी को बड़ा मुद्दा बनाया, पहले चरण की वोटिंग से ठीक एक दिन पहले राहत लेने वाले परेस कोंफ्रेंस कर एनडीए पर वोट चोरी का आरोप लाया। दरअसा में "वोट यात्रा" के दौरान उत्तर में समय से प्रधानमंत्री की मां के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी भी की गई, जिसे भाजपा ने बड़ा मुद्दा बनाने हुए कांग्रेस से मार्की की मांग की।

2 वोटर लिस्ट संशोधन पर बैसर विवाद

महागठबंधन ने वोटर लिस्ट में संशोधन (एसआईआर) को भी चुनावी मुद्दा बनाकर बड़ा शोर मचाया, लेकिन ममता कोंटं जाने के बाद यह विरोधी लीमा पड़ गया। जनता इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं ले पाई। संप्रामुख अखिलेश यादव ने भी एसआईआर को "महागठबंधन को हराने की साजिश" बताया, लेकिन यह राजनीति वालों को आवश्यकीय माना और सिर्फ तब जब नाम पर एनडीए को प्राथमिकता दी।

3 अवास्तविक और बढ़ा-चढ़ाकर किए गए वादे

एक तरफ नीतीश कुमार की 20 साल पुरानी योजनाओं की गारंटी भी, वहीं दूसरी ओर तेजस्वी यादव के अत्यवारिक वादे, तेजस्वी ने हर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने, जीविका दीरी को 3,000 की जगह 10,000 रुपये देने जैसे कई वादे किए, जिन्हे पूरा करना सभव नहीं था। जनता ने इन वादों को आवश्यकीय माना और सिर्फ तब जब नाम पर एनडीए को प्राथमिकता दी।

4 एनडीए के खिलाफ नकारात्मक अभियान

विपक्ष ने पूरे चुनाव अभियान में एनडीए के खिलाफ नकारात्मक कैंपेन चलाया। प्रधानमंत्री मोदी को "प्रदाताचार का भीष्म पितामह" तक कहा गया। जनता ने इसे अत्याधिक नकारात्मक राजनीति मानकर परंपरा नहीं किया। खासकर तब जब नीतीश कुमार फिल्मों दो दस्तकों से राज्य की सत्ता में दिया चहरा रहे हैं। इस राजनीति ने महागठबंधन को लाभ पहुंचाने के बायां नुकसान ही किया।

5 तेजस्वी को सीएम चेहरा घोषित करना

महागठबंधन ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया, लेकिन लाल यादव के "जंगल राज" वाले पुराने दौर को स्तापिती दल ने बार-बार जनता के समाने रखा। तेजस्वी की छवि पर लालू का यह पुराना बोंडा भारी पड़ गया और जनता ने जीतियम तेजे के बायां एनडीए को सुरक्षित विकल्प माना।

बिहार के लोगों ने विपक्षी महागठबंधन के जंगलराज को पूरी तरह से नकारा: नड़ा नई दिली। बिहार विधानसभा चुनाव के नीतीजे आने लगे हैं। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एसआईए) में 200 से सीटों से अधिक सीटों पर जीत की ओर अग्रसर है, इसमें अकेले भारतीय जनता पार्टी 92 सीटों पर जीत की ओर अग्रसर है। बिहार में एसआईए जीतों को लेकर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड़ा ने जनता को बधाई दी है। उन्होंने विपक्षी महागठबंधन पर जीती प्राहर करते हुए जहां ने कहा कि बिहार के लोगों ने विपक्षी गठबंधन के जंगलराज और भ्राताचार को पूरी तरह से नकारा दिया है।

बिहार विस चुनाव में मोदी-नीतीश की जोड़ी हिट : शाहनवाज हुसैन

पटना | भाजपा के राष्ट्रीय प्रकाश तैयारी शाहनवाज हुसैन ने राजग का रुद्धान में मिल रही 197 सीटों और महागठबंधन को 40 सीटों पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि बिहार में मोदी-नीतीश की जोड़ी हिट है। जनता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विकास क्षेत्र पर पुनः भरोसा जताया है। उन्होंने कहा कि बिहार का यह चुनाव परिणाम तथाकृतिश से बदल रहा है। आखिरी होगा।

जीत से एनडीए व मोदी पर लोगों का विश्वास एक बार फिर साबित हुआ : पवन कल्याण

अमरकरता। जन सेना प्रमुख और आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने कहा कि बिहार चुनाव में जीत के साथ राष्ट्रीय गठबंधन (राजग) और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लोगों का विश्वास एक बार फिर साबित हुआ है। पवन कल्याण ने कहा कि देश की जनता का मानना है कि भारत का विकास क्षेत्र लोदी के नेतृत्व में ही संभव है। उन्होंने इस विश्वास के लिए प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि लंबे समय से सार्वजनिक मुख्यमंत्री को प्रदान की जीत के लिए आंध्रप्रदेश के लिए आंध्रप्रदेश नीतीश कुमार के प्रति बिहार के लोगों की प्रांगणी कम ही हुई है।

जीत से एनडीए व मोदी पर लोगों का विश्वास एक बार फिर साबित हुआ : पवन कल्याण

अमरकरता। जन सेना प्रमुख और आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने कहा कि बिहार चुनाव में जीत के साथ राष्ट्रीय गठबंधन (राजग) और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लोगों का विश्वास एक बार फिर साबित हुआ है।

पवन कल्याण ने कहा कि देश की जनता का मानना है कि भारत का विकास क्षेत्र लोदी मोदी के नेतृत्व में ही संभव है। उन्होंने इस विश्वास के लिए प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी। जीत के लिए प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि लंबे समय से सार्वजनिक मुख्यमंत्री को प्रदान की जीत के लिए आंध्रप्रदेश नीतीश कुमार के प्रति बिहार के लोगों की प्रांगणी कम ही हुई है।

जहां-जहां राहुल गांधी जाते हैं, वहां-वहां भाजपा जीतती है : डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा

एजेंसी | गुवाहाटी



असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने शुक्रवार का विधानसभा चुनाव ने आंध्रप्रदेश को लेकर प्रतिवादिया व्यक्त करते हुए चुनाव से बदल रहा है। विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जीत लाने वाले आंध्रप्रदेश की जीत जाती है। जीत की जीत की जीत हो रही है। जीत की जीत की जीत हो रही है।

एक जनसंघ को संवधित करते हुए एनडीए के लिए जाते हैं,